International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume: 2, Issue: 7, 510-511
July 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 3.762

मनोज कुमार
प्रवक्ता–बी0एड0 विभाग
(एस0 आर0 एस0 पी0 जी0 कालेज, नरैनी–बाँदा)

Correspondence:
मनोज कुमार
प्रवक्ता–बी0एड0 विभाग
(एस0 आर0 एस0 पी0 जी0 कालेज, नरैनी–बाँदा)

''अतुल्य भारत निर्माण के लिए विवेकानन्द का आह्वान''

मनोज कुमार

जब–जब इस पृथ्वी पर धर्म का पतन और आततायियों का क्लेश सम्पूर्ण मानव समाज को पथभ्रष्टता की ओर ले जाने लगता है अर्थात् जब दानवता का वर्चस्व मानवता पर बढ़ जाता है और मानवता का तेजी से पतन होने लगता है तब समाज को नई दिशा व दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए इस पृथ्वी पर समय–समय पर महापुरुषों का जन्म होता है। भारत में ऐसे अनेकों महापुरुषों में से स्वामी विवेकानन्द का नाम अग्रणी है। स्वामी विवेकानन्द एक महान विचारक, शिक्षा मनीषी एवं आधुनिक मानव समाज के लिए प्रमुख आदर्श व्यक्तित्व थे। स्वामी जी को युवाओं की प्रेरणा स्रोत तथा भारत का अध्यात्मिक राजदूत कहा जाना कोई अतिसयोक्ति नहीं होगी।

स्वामी जी का कहना था कि सम्पूर्ण दुनिया में भारत ही प्रथम भूमि थी जहाँ ज्ञान ने सर्वप्रथम अपना आवास बनाया था और मानव प्रकृति के रहस्यों के अंकुरण सर्वप्रथम इसी भूमि पर हुये थे। उनका कहना था कि भारत ही विश्व का एक मात्र ऐसा देश है जिसने अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को चिरकाल से बनाये रखा है। विश्व के अनेकों देशों का वजूद समाप्त हो गया किन्तु आज भी हम जीवित हैं और आज भी हमारे वेद, पुराण, उपनिषद्, ऋषि, सभ्यता, संस्कृति व परम्पराएं जीवित अवस्था में है।

यही वह भारतवर्ष है जिसने हजारों वर्षों तक विभिन्न प्रकार के दुःखद दिनों की यातना को झेला हुआ है इस देश ने संसार की किसी भी चट्टान से अधिक कठोरता के साथ अपने आप को स्थापित करके रखा हुआ है। इस देश की जीवन शक्ति भी आत्मा के समान ही अनादि, अनन्त, अखण्ड एवं अमर है, हम सभी को ऐसे महान देश की सन्तान बनने का गौरव प्राप्त है।

स्वामी जी के बारे में गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा कि – ''यदि आप भारत को समझना चाहते है तो विवेकानन्द का अध्ययन कीजिए। उनमें सब सकारात्मक है; कुछ भी नकारात्मक नहीं है।'' भारत की उन्नतिशीलता का आधार जनसाधारण की शिक्षा और बुद्धि का चतुर्मुखी प्रसार है।

उन्होंने सम्पूर्ण समाज को उद्योगशीलता, कर्मण्यता एवं परिश्रम करके जीवन गुजारने का पाठ पढ़ाया। उन्होंने प्राचीन काल से चली आ रही आडम्बर पूर्ण विचारधाराओं के स्थान पर सत्य एवं प्रामाणिक तथ्यों को महत्त्व दिया। स्वामी जी ने जातिवाद एवं अस्पृश्यता को जड़ से उखाड़ फेंकने का आनान किया। इससे पता चलता है कि वह भारत के जन–जन के विकास को देखना चाहते थे।

भारत देश में धर्म ही सम्पूर्ण राष्ट्र का हृदय है ऐसा स्वामी जी का विचार था क्योंकि इसी के ऊपर सम्पूर्ण राष्ट्र की ईमारत खड़ी हुई है। स्वामी जी के अनुसार..

''मैं ऐसा धर्म चाहता हूँ जो हर व्यक्ति को अन्न, जल, वस्त्र और शिक्षा देने के साथ–साथ उन्हें अपने सभी दुःख दूर करने की शक्ति प्रदान करें। हम सब भारतीय पहले है, मराठी, गुजराती, बंगाली तथा मद्रासी बाद में। सबको मिलकर इस देश की दरिद्रता एवं अज्ञानता को दूर करना है।''

मुट्ठी भर लोगों के हाँथों में बुद्धि का आधिपत्य नहीं होना चाहिए। निम्न व कमजोर वर्ग की सबसे बड़ी सेवा यह होगी कि उन्हें शिक्षित किया जाये और उनके सम्मुख विचारों को रखा जाये। जन समुदाय के लिए उनके हृदय में अत्यन्त स्नेह था। गरीबों की दशा को देखकर उनका मन व हृदय दुःख से भरा जा रहा था जिस पर उनकी निम्नवत पंक्तियाँ अत्यन्त सार्थक प्रतीत होती है – ''अपनी आँखें खोलो और देखो भारत भूमि से भोजन के लिए कैसे करुण पुकार आ रही है।''

स्वामी जी का विचार था कि आध्यात्मिक प्रगति से पूर्व देश की समृद्धि अति आवश्यक है। उन्होंने आर्थिक हीनता को सुधारने तथा जन सामान्य की शिक्षा पर निम्नवत उद्बोधन दिया – ''मैं जनसाधारण की अवहेलना करना राष्ट्रीय पाप समझता हूँ। यह हमारे पतन का मुख्य कारण है, जब तक भारत की सामान्य जनता को एक बार फिर उपयुक्त शिक्षा, अच्छा भोजन तथा अच्छी सुरक्षा प्रदान नहीं की जायेगी तब तक प्रत्येक राजनीति बेकार सिद्ध होगी।''

भारतीय संस्कृति के अनन्य पोषक, समग्र क्रांति के अग्रदूत, नवभारत का निर्माण करने वाले शिक्षा में राष्ट्रवाद का निर्माण करने वाले स्वामी जी ने अंग्रेजी शिक्षा का प्रबल विरोध न करके उसके स्थान पर एक नवीन शिक्षा प्रणाली – ''वैदान्तिक साम्यवाद'' की भविष्यवाणी की। स्वामी जी का मानना था कि वेदान्त के माध्यम से भारतवर्ष का उत्थान एवं कल्याण हो सकता है। वह कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग तथा राजयोग को ऊर्जा का पुँज कहते थे जो युवा शक्ति को जागृत करने के लिए आवश्यक था। उन्होंने कहा था –

''मुझे 100 जोशीले युवा लोग दो, मैं भारत को बदल दूँगा''

उन्होंने भारतीय युवकों को यह सन्देश दिया कि – ''तुम्हे ध्येयवादी युवक बनना चाहिए, मानव को केवल मानव की आवश्यकता है और सब कुछ हो जायेगा लेकिन आवश्यकता है वीर्यवान, तेजस्वी, पूर्ण प्रामाणिक नवयुवकों की। अपने पैरों पर खड़े हो जाओ, देरी न करो, क्योंकि जीवन क्षणभंगुर है। क्योंकि लक्ष्य तक पहुँचे बिना पथ में पथिक विश्राम कैसा''

भारत की आडम्बरवादी परम्परा के स्वामी जी प्रबल विरोधी थे उनका मानना था कि चन्दन टीका लगाने से अधिक अच्छा होगा कि आप स्वयं को कर्म तथा निष्ठा से प्रक्षालित करें। उनका कहना था कि चरित्र मनुष्य का निर्माण करता है।

शोध सारांश

वर्तमान समय में भारत में शिक्षा मर्यादाहीन, स्वार्थी, इन्द्रियलोलुप्ता–प्रधान तथा धन को अधिक महत्त्व देने वाली बन गयी है। चरित्र, राष्ट्रभक्ति और आत्मविश्वास का बहुत अभाव है। शिक्षक और नेता शिक्षा को परम पुनीत समाज सेवा का कार्य नहीं मानते बल्कि उसे व्यापार व धन कमाने का साधन मानते हैं। भारतीय शिक्षा की आत्मा दिन–प्रतिदिन मरती जा रही है ऐसे निर्मम समाज को दिशा दिखाने के लिए स्वामी विवेकानन्द के विचारों को सारभूत करने की आवश्यकता है उन्हें अमल करने की आवश्यकता है। तभी हम सभी अतुल्य भारत का निर्माण करने में अपनी सार्थक भूमिका निभा सकते हैं। हमारे शिक्षा मंत्रियों, शिक्षकों व शिक्षा प्रशासकों को स्वामी जी की बातों को मानना चाहिए और प्रेरणा लेकर ठोस जनकल्याणकारी रचनात्मक कार्य शिक्षा जगत में प्रचारित व प्रसारित किये जाने चाहिए। स्वामी जी भारत की एकता एवं अखण्डता के पक्षधर थे तभी उन्होंने राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने के लिए कहा था कि हम भारतीय पहले है, मराठी, गुजराती, बंगाली व मद्रासी बाद में। भारत की गरीबी से स्वामी जी काफी आहत थे तभी उन्होंने भारतीयों को सदैव आत्मनिर्भर बनने की वकालत की। स्वामी जी का युवाओं के लिए कहना था कि मन में अच्छे विचार लांए। उसी विचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाएं। हमेशा उसी के बारे में सोंचे, सपने देखें। यहाँ तक कि उसके लिए ही हर क्षण जिएँ। आप पाएंगे कि सफलता आपके कदम चूम रही है। यदि सम्पूर्ण भारतीय समाज विवेकानन्द जी के आनान का अनुपालन करेगा तो अवश्य ही अतुल्य भारत का निर्माण कर पाना सम्भव होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ओड.एल.के., शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
2. गुप्ता, शिवनारायण, भारतीय स्त्री : परम्परा, आधी आबादी का आर्थिक स्वावलम्बन : सन्दर्भ महिला सशक्तीकरण.
3. त्यागी, गुरुसरन दास, 2012 : शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन.
4. पाण्डेय एवं त्रिपाठी, 2008 : शिक्षा के दार्शनिक आधार, इलाहाबाद : कैलाश प्रकाशन.
5. वर्मा, वी.पी., 2000 : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल.
6. मित्तल, एम.एल., 2008 : उद्रीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, मेरठ : इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस.
7. स्वामी विवेकानन्द, राष्ट्र को आनान, रामकृष्ण मठ, नागपुर.
8. स्वमी विवेकानन्द, नया भारत गढ़ो, रामकृष्ण मठ, नागपुर.
9. स्वमी विवेकानन्द, वर्तमान भारत, रामकृष्ण मठ, नागपुर.
10. स्वमी विवेकानन्द, सफलता के सोपान, रामकृष्ण मठ, नागपुर.
11. स्वमी विवेकानन्द, भारत का भविष्य, रामकृष्ण मठ, नागपुर.
12. लाल, रमन बिहारी, 2012 : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आगरा : रस्तोगी पब्लिकेशन.
13. सिंह, अश्वनी कुमार, 2013 : स्वामी विवेकानन्द : भारत सम्बन्धी दृष्टिकोण, संस्कृति परिचय, इलाहाबाद.
14. धर्म और संस्कृति के महान उन्नायक स्वामी विवेकानन्द, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि, मथुरा.